विषयों की रेलगाड़ी पर चिट्ठी की सवारी

चन्द्रिका सोनी

विषयों की सीमा हटने से सीखना कितना मज़ेदार हो जाता है यह हर शिक्षक साथी ने महसूस किया होगा। और छोटे बच्चे तो वैसे ही विषयों की इस सीमा में नहीं बँधते। उनका मन करेगा, तो पर्यावरण की हवा संगीत की कॉपी में मिलेगी, गीतों की माला हिन्दी की कॉपी में और टोकरी से ग़ायब चार आम पर्यावरण के पन्नों में। सारे विषय एक-दूसरे से इस तरह गुँथे हुए हैं कि बच्चे उन्हें अलग करना भी नहीं चाहते। उसपर अगर दो विषयों में मिलता-जुलता कोई प्रकरण हो तो फिर खिचड़ी और पुलाव तो होना ही है। ऐसे ही एक ख़ूबसूरत अनुभव से मेरा सामना हुआ कक्षा तीसरी में। मैं इस कक्षा के साथ एक ख़ास जुड़ाव महसूस करती हूँ। क्योंकि हर रोज़ मेरा इस क्लास में कम से कम दो से तीन बार जाना होता है और कभी-कभी तो एक दिन में चार बार भी हो जाता है।

यहाँ मैं दो विषयों पर काम करती हूँ—पर्यावरण अध्ययन और हिन्दी। हिन्दी विषय से जुड़कर मैं पहली बार काम कर रही हूँ, इसलिए भाषा की जटिलता कभी-कभी मुझे उलझा देती है और कभी-कभी नई राह भी खोल देती है, जो मुझे दूसरे विषय— पर्यावरण अध्ययन में भी मदद कर जाती है। कभी-कभी जब दोनों विषयों में एक ही प्रसंग (थीम) हो तो दोनों को साथ में पढ़ाने का उभयनिष्ठ (कॉमन) तरीक़ा भी मिल जाता है।

दो विषयों में मिलती-जुलती थीम का एक ऐसा ही उदाहरण है :

'घटती दूरियाँ' (संचार के साधन पर आधारित) — पर्यावरण अध्ययन में।

'मैत्री बाग़' (पत्र लेखन की शुरुआत) — हिन्दी में।

पर्यावरण अध्ययन में संचार के साधनों का टॉपिक हमेशा परेशान करता है, क्योंकि अभी के बच्चे पत्र लेखन न करते हैं, न घर में किसी को पत्र लिखते देखते हैं। वैसे भी आजकल मोबाइल संचार के ज़माने में चिट्ठी लिखना तक़रीबन ग़ायब ही हो गया है, वैसे ही जैसे पुराने समय में सन्देश भेजने के लिए कबूतरों का इस्तेमाल। यही हाल अब लेटर बॉक्स का भी है। दिखते भी नहीं और इस्तेमाल भी नहीं होते। बच्चों को पत्र लिखना और उसके पहुँचने की प्रक्रिया को समझाना हवा में महल बनाने के समान ही मुश्किल लगता है। बच्चों ने न कभी अन्तर्देशीय देखा है, न पोस्टकार्ड। न उन्होंने इन सबका प्रयोग होते देखा है। लिफ़ाफ़े से तो फिर भी उनका आमना-सामना हो ही जाता है, राखी के समय या शादी के कार्डों के रूप में।

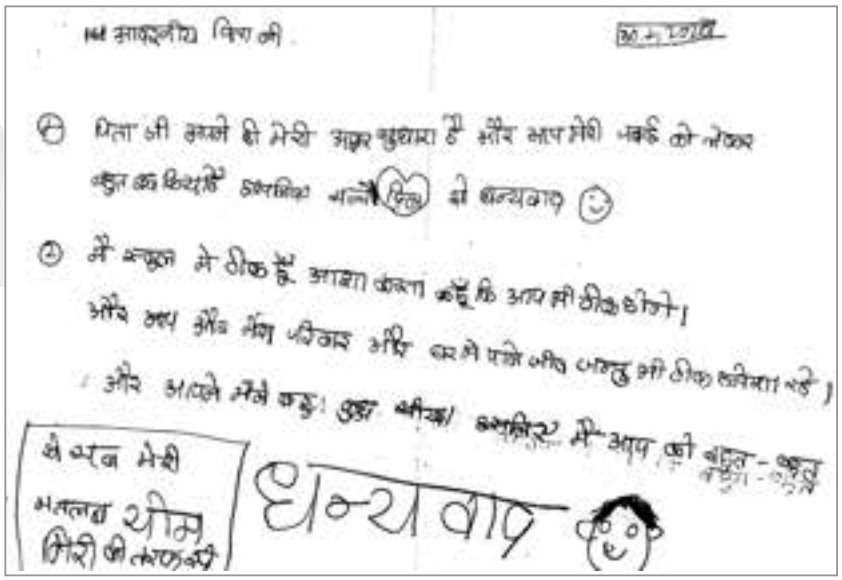

[1]*A zoo in Bhilai, Chhattisgarh, India.*

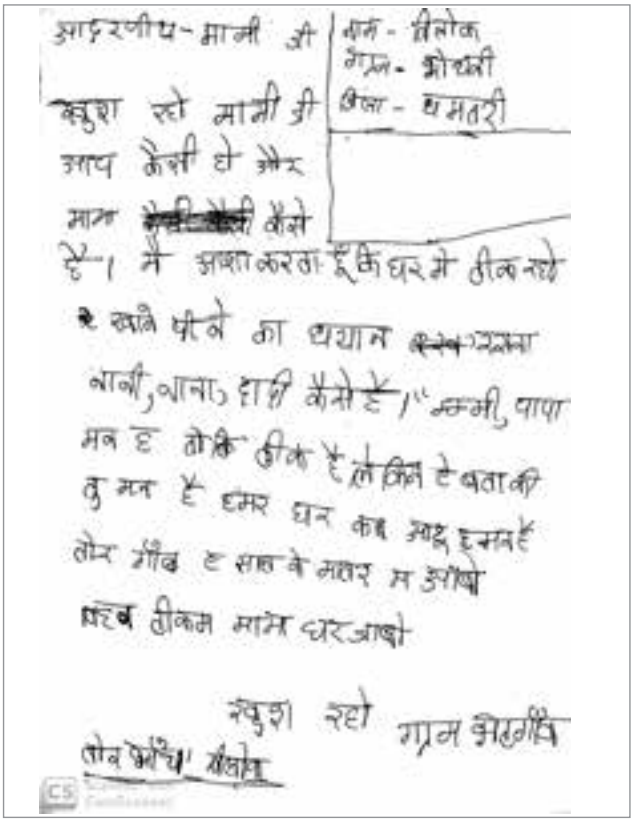

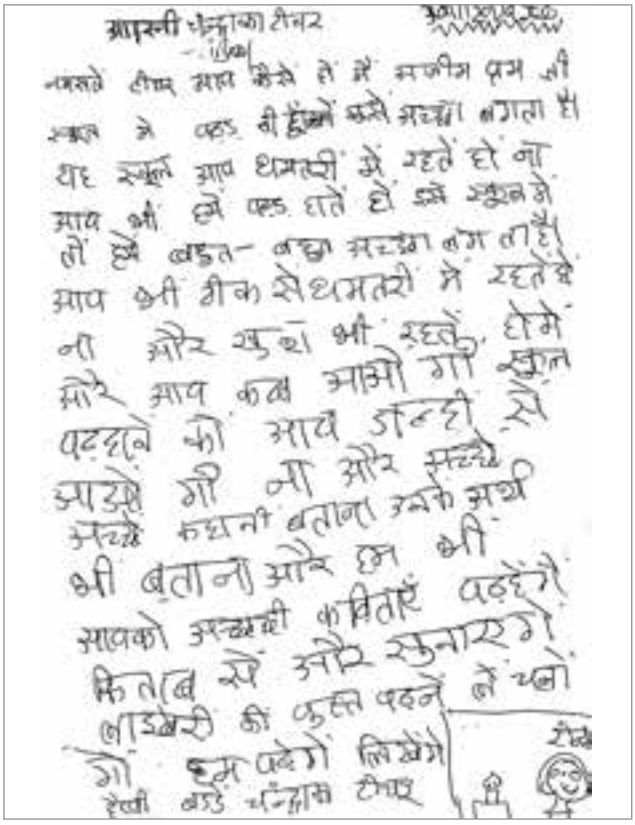

लेकिन फिर भी वे चिट्ठियों की आवाजाही की प्रक्रिया से तो अनजान ही रहते हैं।

ऐसे में यह प्रक्रिया बच्चों को कैसे समझाई जाए मैं यही सोच रही थी कि हिन्दी में 'मैत्री बाग़' पाठ की शुरुआत हुई। इसने मुझे रास्ता दिखाया। इस पाठ में एक चाचा अपने भतीजे को पत्र लिखकर मैत्री बाग़ के बारे में विस्तार से बता रहे हैं। इस पाठ को पढ़ने के बाद बच्चों ने भी अपने-अपने दोस्त, परिवार के सदस्यों और शिक्षकों के नाम कुछ पत्र लिखे। अब बात आई पत्र भेजने की।

पत्र भेजने के लिए पता लिखना होता है। उसे लेटर बॉक्स में डालना होता है। इस प्रक्रिया में दिक़्क़त महसूस हुई। पर्यावरण अध्ययन की किताब में छपा चित्र भी भ्रमित करता है। कौन-सा चरण किसके बाद आता है यह आप चित्र देखकर नहीं समझ सकते। मसलन, यह स्पष्ट नहीं होता कि डाकघर में चिट्ठी जमाता व्यक्ति भेजने वाले व्यक्ति के शहर के पोस्ट ऑफ़िस को दर्शा रहा है या चिट्ठी प्राप्त करने वाले व्यक्ति के शहर को। इस टॉपिक पर रोल प्ले कराना काफ़ी सहायक होता है, पर वह भी सही तरीक़े से हो पाए यह सुनिश्चित कर पाना मुश्किल हो सकता है।

इन्हीं सब दुविधाओं के बीच मुझे एकलव्य प्रकाशन की किताब ख़त का ध्यान आया। यह एक बहुत ही ख़ूबसूरत छोटी-सी कहानी है जो एक नन्ही बच्ची अपूर्वा ने अपने दादाजी (आजोबा) के नाम लिखी है, जो नागपुर में रहते हैं। अपूर्वा ने यह कहानी अपने दादाजी के जन्मदिन के अवसर पर बधाई देने के लिए लिखी है। वह चाहती है कि ख़त समय पर उसके दादाजी के पास पहुँच जाए। उसने लिफ़ाफ़े पर दो सुन्दर आँखें और मुस्कराहट बताने वाला एक चित्र बनाया है। और अन्दर ख़ूबसूरत फूलों की बेल के बीच सन्देश लिखा है।

फिर वह उस पत्र को लेटर बॉक्स में डालते हुए कहती है, "जल्दी जाना मेरे दादू के पास।"

इस तरह उस चिट्ठी के नागपुर पहुँचने तक की यात्रा काफ़ी ख़ूबसूरत ढंग से लिखी गई है। इस कहानी को जब मैंने बच्चों के साथ साझा किया तो बच्चों के चेहरों पर एक प्यारी मुस्कान थी। तभी मैंने सोचा इसी को रोल प्ले में शामिल किया जाए।

हमने कुछ प्यारे-प्यारे पात्र बनाए। चार बच्चे लेटर बॉक्स बने, एक बच्ची अपूर्वा और एक बच्चा उसका पत्र। छह बच्चे अलग-अलग जगह जाने वाले पत्र और पार्सल बने। दो बच्चों ने डाकिए की भूमिका निभाई। कुछ बच्चे पोस्ट ऑफ़िस के कर्मचारी बने जो सील लगाने और पत्र छाँटने का काम करते हैं। कोई साइकिल तो कोई ट्रेन के डिब्बे बने। इस तरह कक्षा के आधे बच्चे इस गतिविधि में शामिल थे। बाक़ी बच्चे इस प्रक्रिया को होता देख रहे थे और काफ़ी ख़ुश थे।

कैसे लेटर बॉक्स में जाने के बाद पत्र डरता है, अँधेरे से; बाक़ी पत्रों के पीछे छुप जाता है; कैसे ट्रेन की आवाज़ पर सहम जाता है; कैसे उसकी दोस्ती नागपुर जाने वाले पार्सल बॉक्स के साथ होती है और वह पूरी रात ट्रेन में उस बड़े बॉक्स के पास सोता रहता है; उसपर जब ठप्प करके मुहर लगाई जाती है तो कैसे वह आँखें मीच लेता है। बच्चों ने हर पात्र बख़ूबी निभाया और पत्र भेजने की प्रक्रिया और विभिन्न चरण समझे।

बच्चों की भागीदारी इतनी उम्दा थी कि हमने ये सोचा कि क्यों न यह पूरी प्रक्रिया सुबह की सभा में करके दिखाएँ, ताकि बाक़ी सब भी इस ख़ूबसूरत गतिविधि और जटिल प्रक्रिया को आसानी से समझ पाएँ। बच्चे पूरे जोशोख़रोश से सम्बन्धित नाटक बनाने में लग गए। यह नाटक हम आने वाले बुधवार को दिखाने वाले थे।

तो इस तरह हिन्दी की पाठ्यपुस्तक से शुरू हुआ अध्ययन का एक विषय (पत्र) पर्यावरण अध्ययन विषय के चरणों को समझाता हुआ सुबह की सभा तक की यात्रा करने चला। इस विषय की समझ बनाने के दौरान हमें बच्चों के कुछ ख़ूबसूरत विचारों को जानने का मौक़ा मिला। कुछ अंश बहुत ख़ूबसूरत थे जो उन्होंने अपने माता-पिता को लिखे थे। उन्हें हमने उनके पालकों तक भी पहुँचाया। पालक भी बहुत ख़ुश हुए।

चन्द्रिका सोनी अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी में पर्यावरण अध्ययन की शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं। बतौर शिक्षिका, वह बच्चों के साथ मिल-जुलकर कार्य करने, रचनात्मक कार्यों से बच्चों की प्रतिभाओं को नए आयाम देने, कौशल आधारित पर्यावरण शिक्षण में विशेष रुचि लेती हैं। उनसे chandrika.soni@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।